ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-11*December- 2021
Innovation The Research Concept

सयुंक्त परिवार का वर्तमान स्वरूप और भविष्य बून्दी जिले के संदर्भ में

The Present Form and Future of Joint Family with Reference to Bundi District

Paper Submission: 15/12/2021, Date of Acceptance: 21/12/2021, Date of Publication: 23/12/2021

मीना सहगल
शोधार्थी
समाज शास्त्र विभाग
केरियर पॉइन्ट यूनिवर्सिटी
कोटा, राजस्थान, भारत

शर्मिला कुमारी
शोध निर्देशक
समाजशास्त्र विभाग
केरियर पॉइन्ट यूनिवर्सिटी
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश / **Abstract**

परिवार ही सामाजिक जीवन की प्राथमिक पाठषाला हैं, संयुक्त परिवार में रहकर अनुषासन, संस्कार, रीति-रिवाज और प्राथमिक गतिविधियाँ सीखने को मिलती हैं। परिवार का हर सदस्य अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करता हैं। समय के साथ-साथ परिभाशा बदल गई हैं। परिवार की आर्थिक और षैक्षिक स्थितियों के अनुसार जीविकोपार्जन के लिए गाँवो से नगरो की और पलायन से संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं और उनका स्थान एकल परिवार ने ले लिया हैं। जिससे पारिवारिक रिश्तो की अहमियत कम हो गई हैं। बच्चो को सामाजिक जिम्मेदारीयों की षिक्षा नहीं मिल पा रही हैं, जिसके कारण वृद्धाश्रमों की संख्या अधिकतम बढ़ रही हैं। संयुक्त परिवार में मुखिया का महत्व बहुत अधिक था। लेकिन परिवार में मुखिया का महत्व कम होने लगा हैं। बड़ो के महत्व एवं सम्मान में कमी आयी हैं। बढ़ती महत्वकांक्षा के कारण संयुक्त परिवार एकल परिवार में तब्दील होने लगे हैं। पहले व्यक्ति का हित सोचता हैं, वह अधिक उपयोगितावादी और सुखवादी हो गया हैं, आने वाले भविश्य में व्यक्ति को किसी भी रिष्ते भी रिष्ते से कोई सरोकार नहीं होगा। आज का व्यक्ति इतना स्वार्थी हो गया हैं वो भविश्य का व्यक्ति कैसा होगा। भविश्य में इस समस्या को कम करने के लिए सरकार को और परिवार को परवरिष और संस्कार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता हैं।

Family is the primary school of social life, discipline, rituals, customs and primary activities are learned by living in a joint family. Every member of the family works according to his capacity. Definitions have changed with the passage of time. According to the economic and educational conditions of the family, due to migration from villages to cities to earn a living, joint families are breaking up and their place has been replaced by nuclear families. Due to which the importance of family relations has diminished.Children are not getting education of social responsibilities, due to which the number of old age homes is increasing to the maximum. The importance of the head was very high in a joint family. But the importance of the head in the family has started decreasing. There has been a decrease in the importance and respect of elders. Due to increasing ambition, joint families have started turning into nuclear families. thinks the interests of the first person, he has become more utilitarian and hedonistic,In the coming future, the person will not have any relation with any relationship. Today's person has become so selfish, how will that future person be. To reduce this problem in the future, the government and the family need to pay special attention to the upbringing and culture.

मुख्य बिन्दुः शताब्दी - शती, शतक, मौलिक - मूलभूत, खानमुख - बहुत बोलने वाला, अंतार्किक - तर्कहीन, सामज्ंसय -तालमेल, प्रकर्यात्मक -क्रियाशील ।

Keywords: Shatabdi - Century, Century, Fundamental - Basic, Khanamukh - Very Talkative, Antarktika - Irrational, Harmonizing - Synergy, Functional - Functional.

प्रस्तावना

टूटता संयुक्त परिवार एवं बिखरते रिश्ते से शुरू करना हैं, (परिवार व्यवस्था का भविश्य) से पहले खत्म करना हैं।

उपकल्पना

संयुक्त पुंजी व संयुक्त निवास तथा संयुक्त उत्तरदायित्व के कारण आर्थिक सुरक्षा होने के कारण परिवार में उनका प्रभुत्व था। परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में औधागिकीकरण, नगरीकरण, आधुनिकरण, नवीन आर्थिक व्यवस्था तथा सामाजिक गतिषीलता में वृद्धि में परिवार की परम्परागत् संख्यात्मक व प्रक्रियात्मक प्रकृति को विखंडित कर दिया हैं तथा उनके स्थान पर एंकाकी परिवारों का प्रचलन बडा हैं। जो युवा पीढी के लिए उपयुक्त एवं सुविधाजनक सिद्ध हो रहा हैं। सयुंक्त परिवार के टूटने का महत्वपूर्ण का व्यक्ति की अधिक महत्वकांक्षा हैं। अधिक सुविधायें पाने की लालसा के कारण पारिवारिक सहनषक्ति समाप्त होती जा रही हैं। अब वह अपनी खुषिया परिवार और परिवारजनों में नहीं बल्कि अधिक सुख साधन जुटाकर ढूढंता हैं। यही सयुंक्त परिवार के बिखरने का कारण रहा हैं। अत्याधिक महंगाई व सीमित

आय के कारण परिवार के युवा सदस्य माता-पिता को अपने साथ रखने में असमर्थ हैं। परिवार के भविश्य में कोई षंका करने से पहले यह ध्यान रखना आवष्यक हैं कि परिवार का निर्माण क्यों हुआ? स्नेह की लालसा और बच्चो का पालन-पोशण निसन्देह परिवार के निर्माण के आधार भूत कारक रहे हैं, जो आज भी सर्वव्यापी हैं। परिवार ने सदैन नवीन परिस्थितियों से अनुकुलन करके अपने स्थायित्व को सुरक्षित रखा हैं। ब्रजेस और लॉके ने परिवार के भविश्य का उल्लेख करते हुऐ कहा हैं कि परिवर्तित दषाओं से अनुकुलन करने के लम्बे इतिहास और स्नेह सम्बन्ध कार्यो को देखते हुऐ सुरक्षित रूप से यह भविश्यवाणी की जा सकती हैं, कि परिवार सदैव जीवित रहेगा और व्यक्तिगत् विकास में देता रहेगा। परिवार ने सदैव नवीन परिस्थितियों से अनुकुलन करके अपने स्थायित्व को सुरक्षित रखा हैं। आधुनिकता व्यक्ति को "अधिकार सम्पन्न" करती हैं और पारिवारिकता व्यक्ति को अधिकार सीमित करती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

पाष्चात्य देषो की तर्ज पर परिवार विहिन समाज स्थापित हो रहे हैं, इसकी और लोगा का ध्यान आकर्शित करना, (2) संयुक्त परिवार की महत्तता को दर्षाना (3) एकल परिवार होने के नुकसान से समाज को अवगत करना, (4) बच्चो को संस्कार वान और नैतिकता का पाठ पढ़ाना ताकि आने वाली पीढ़ी संस्कारी बनें।

निष्कर्ष

बच्चो में बढ़ रही स्वायत्तता की भावना के परिवार स्वरूप माता-पिता व बच्चो के सम्बन्ध षिथिल हो रहे हैं। पारिवारिक विघटन से उत्पन्न इस स्तिता से ओल्ड हेज हॉम एवं अन्य सहायता समुह स्थापित हो रहे हैं। इन सब को भविश्य में रोकने के लिए एक स्वस्थ सामाजिक परिप्रेक्ष्य की नितान्त आवष्यक हैं।परिवार के वर्तमान रूप का हम भले ही विघटित न कहे लेकिन इसके ढाचे और कार्यो में होने वाले तीव्र परिवर्तन के आधार पर अधिकतर व्यक्ति इसके विघटित भविश्य की आषं्ाका करते हैं। यद्यपि बाजार में होने वाले परिवर्तनों की तीव्रता के आधार पर ऐसी षंका किसी के मन में पैदा हो सकती हैं, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि अतीत में भी परिवार के रूप और कार्यो में सदैव परिवर्तन होते रहते हैं। लेकिन परिवार का अस्तित्व सभी परिवर्तनों के पष्चात् भी उसी रूप में विद्यमान रहा हैं। परिवार को एक स्थायी और षाष्वत रूप देखकर इसके भविश्य से सम्बन्धित सभी षाकाओं को दूर कर देता हैं। पाष्चात्य ससंकृति को अपनाने से दिन ब दिन तलाक में वृद्धि हो रही हैं। पाष्चात्य देषो में परिवार विहिन समाज स्थापित होने की कगरा पर हैं, परन्तु अभी हमारे समाज में परिवार समाप्त नहीं हो रहे हैं, बस उनके स्वरूप में परिवर्तन हो रहा हैं। विभिन्न समाज षास्त्री और मानव षास्त्रीयों ने यही निश्कर्श निकाला हैं कि जिन बच्चो को अपने माता-पिता के संरक्षण में सामाजिकरण होता हैं, वे प्रत्य जीवन में कुछ ज्यादा ही सफल होते हैं और हम आषन्वित हैं कि सयुंक्त परिवार का भविश्य में उजला भविश्य हैं। चाहे आज वर्तमान में सयुंक्त परिवार के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *एम.एन. श्री निवास (1972) हिन्दू धर्म के सिद्धान्त पेज-204*
2. *जेसी बर्नार्ड ने अपनी पुस्तकThe Future of marriage 1972*
3. *डेविस किग्सले Hanuman society New York Macmillan company p-509*
4. *डेविस किग्सले (1949) मिश्रा प्रिति (2005 हिन्दू महिलाओं के जीवन में धर्म का महत्त्व, अर्जुन पब्लिशिग हाउस नई दिल्ली पेज-106*
5. *श्री निवास और षाह (1972) हिन्दू धर्म के सिद्धान्त पेज-359*
6. *इन्टरनेशनलइनसाइक्लोपीडिया आफ सोशल साइंसेज न्यूयार्क।*